अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

# भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण और रूस: बदलते वैश्विक शक्ति समीकरणों का विश्लेषण

**रचना[1], डॉ मीनाक्षी[2]**

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, NIILM यूनिवर्सिटी, कैथल, हरियाणा
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, NIILM यूनिवर्सिटी, कैथल, हरियाणा

**सार**

**भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण दक्षिण एशिया की भू-राजनीति का एक जटिल और गतिशील स्वरूप प्रस्तुत करता है, जिसमें रूस की भूमिका बदलते वैश्विक शक्ति समीकरणों के संदर्भ में विशेष महत्त्व रखती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारत, चीन और पाकिस्तान के पारस्परिक संबंधों तथा इन देशों के साथ रूस की विकसित होती रणनीतिक सहभागिता का विश्लेषण करना है। शीत युद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के बीच स्थापित घनिष्ठ संबंधों ने दक्षिण एशिया में शक्ति-संतुलन को प्रभावित किया, किंतु सोवियत संघ के विघटन, चीन के वैश्विक शक्ति के रूप में उदय, चीन–पाकिस्तान रणनीतिक साझेदारी तथा बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के विकास ने रूस की क्षेत्रीय नीति को अधिक व्यावहारिक और बहुआयामी बनाया है। वर्तमान परिदृश्य में भारत–रूस संबंध रक्षा, ऊर्जा, परमाणु सहयोग और बहुपक्षीय कूटनीति पर आधारित हैं, जबकि रूस–चीन संबंध पश्चिमी प्रभाव के प्रति रणनीतिक संतुलन और आर्थिक सहयोग से सुदृढ़ हुए हैं।**

**दूसरी ओर, रूस और पाकिस्तान के बीच रक्षा, ऊर्जा तथा क्षेत्रीय सुरक्षा के क्षेत्रों में बढ़ती सहभागिता दक्षिण एशियाई कूटनीति में नए आयाम जोड़ती है। अध्ययन यह रेखांकित करता है कि भारत के लिए चीन की बढ़ती सामरिक शक्ति और चीन–पाकिस्तान सहयोग सुरक्षा संबंधी प्रमुख चुनौतियाँ उत्पन्न करते हैं, वहीं रूस के चीन और पाकिस्तान के साथ बढ़ते संबंध भारत–रूस पारंपरिक साझेदारी को अधिक जटिल बनाते हैं। ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन तथा अन्य बहुपक्षीय मंच इन चार देशों को सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों के अवसर प्रदान करते हैं। निष्कर्षतः, भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण में रूस की भूमिका किसी एक पक्ष के समर्थन तक सीमित न होकर रणनीतिक स्वायत्तता, बहुध्रुवीयता, राष्ट्रीय हित और क्षेत्रीय स्थिरता के बीच संतुलन स्थापित करने की नीति को प्रतिबिंबित करती है।**

**मुख्य शब्द: भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण, रूस, भू-राजनीति, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, रणनीतिक शक्ति-संतुलन**

## प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी की अंतरराष्ट्रीय राजनीति तीव्र भू-राजनीतिक परिवर्तन, शक्ति के पुनर्वितरण, रणनीतिक प्रतिस्पर्धा तथा बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उभार से प्रभावित हो रही है। शीत युद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के विघटन के बाद कुछ समय तक संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व वाली एकध्रुवीय व्यवस्था अंतरराष्ट्रीय राजनीति की प्रमुख विशेषता रही। किंतु चीन के तीव्र आर्थिक एवं सामरिक उदय, रूस की पुनर्सक्रिय विदेश नीति, भारत की बढ़ती आर्थिक एवं कूटनीतिक क्षमता तथा वैश्विक दक्षिण के देशों की बढ़ती भूमिका ने विश्व राजनीति में शक्ति के वितरण को अधिक जटिल बनाया है। जोसेफ नाई के अनुसार, समकालीन विश्व में शक्ति का वितरण केवल सैन्य क्षमता पर आधारित नहीं है, बल्कि आर्थिक संसाधनों, संस्थागत प्रभाव, तकनीकी क्षमता और आकर्षण की शक्ति भी राज्यों की वैश्विक स्थिति निर्धारित करती है (नाई, 2011)। इसी प्रकार मियरशाइमर (2001) का मानना है कि महान शक्तियों के बीच प्रभाव, सुरक्षा और क्षेत्रीय प्रभुत्व की प्रतिस्पर्धा अंतरराष्ट्रीय राजनीति की एक स्थायी विशेषता है।

इस बदलते वैश्विक परिदृश्य में दक्षिण एशिया का रणनीतिक महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है। भारत, चीन और पाकिस्तान के बीच संबंध केवल द्विपक्षीय राजनीतिक विवादों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनमें सीमा सुरक्षा, परमाणु प्रतिरोध, रक्षा सहयोग, आर्थिक संपर्क, समुद्री रणनीति और महाशक्तियों के साथ साझेदारी जैसे अनेक आयाम शामिल हैं। इस त्रिकोण में रूस की भूमिका इसे और अधिक जटिल बनाती है। भारत और रूस के बीच दशकों से विकसित रणनीतिक संबंध हैं, जबकि रूस और चीन के बीच वर्तमान समय में व्यापक रणनीतिक सहयोग दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान के साथ रूस की बढ़ती रक्षा, ऊर्जा और सुरक्षा सहभागिता दक्षिण एशिया में रूस की बदलती नीति को दर्शाती है। इस प्रकार भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण और रूस के संबंधों का अध्ययन बदलते वैश्विक शक्ति-संतुलन तथा उभरती बहुध्रुवीय व्यवस्था को समझने के लिए आवश्यक हो जाता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण का भू-राजनीतिक स्वरूप

भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण दक्षिण एशिया और व्यापक एशियाई भू-राजनीति का एक संवेदनशील शक्ति-समीकरण है। भारत और पाकिस्तान के संबंध विभाजन, कश्मीर विवाद, युद्धों, सीमा-पार आतंकवाद और सुरक्षा संबंधी अविश्वास से प्रभावित रहे हैं। दूसरी ओर, भारत और चीन एशिया की दो बड़ी शक्तियाँ हैं, जिनके बीच आर्थिक संबंधों के विस्तार के बावजूद सीमा विवाद और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा बनी हुई है। दोनों देशों के बीच 1962 का युद्ध तथा वास्तविक नियंत्रण रेखा से जुड़े विवाद ऐतिहासिक रूप से द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करते रहे हैं। भारत के विदेश मंत्रालय के अनुसार, भारत और चीन ने सीमा क्षेत्रों में शांति बनाए रखने के उद्देश्य से अनेक द्विपक्षीय समझौते और तंत्र विकसित किए हैं, किंतु सीमा संबंधी प्रश्न द्विपक्षीय संबंधों का एक प्रमुख संवेदनशील विषय बना हुआ है (भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, 2025)।

वर्ष 2020 में पूर्वी लद्दाख में उत्पन्न सैन्य तनाव ने भारत–चीन संबंधों में सुरक्षा और सीमा प्रबंधन के महत्त्व को पुनः रेखांकित किया। इसके परिणामस्वरूप भारत की विदेश एवं सुरक्षा नीति में चीन से संबंधित रणनीतिक चुनौतियों को अधिक प्राथमिकता मिली। राजामोहन (2015) के अनुसार, भारत की बढ़ती आर्थिक एवं सामरिक क्षमता तथा चीन के उदय ने एशिया में शक्ति-संतुलन के नए स्वरूप को जन्म दिया है, जिसमें क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा के साथ सहयोग की संभावनाएँ भी विद्यमान हैं।

इस त्रिकोण का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष चीन–पाकिस्तान संबंध है। दोनों देशों के बीच लंबे समय से राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक सहयोग रहा है। चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा इस साझेदारी का सबसे महत्त्वपूर्ण आर्थिक एवं भू-रणनीतिक उदाहरण है। यह गलियारा चीन की बेल्ट एंड रोड पहल का प्रमुख घटक है तथा ऊर्जा, परिवहन, औद्योगिक विकास, ग्वादर बंदरगाह और क्षेत्रीय संपर्क से संबंधित अनेक परियोजनाओं को सम्मिलित करता है (चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा सचिवालय, तिथि अनुपलब्ध)। भारत ने इस परियोजना के कुछ हिस्सों को लेकर संप्रभुता संबंधी चिंताएँ भी व्यक्त की हैं।

चीन और पाकिस्तान के बीच रक्षा सहयोग भी भारत की सुरक्षा गणनाओं को प्रभावित करता है। स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान के अनुसार, वर्ष 2020–2024 के दौरान पाकिस्तान के प्रमुख हथियार आयातों में चीन की हिस्सेदारी लगभग 81 प्रतिशत रही। इसी अवधि में भारत विश्व के सबसे बड़े हथियार आयातकों में शामिल रहा और उसकी रक्षा खरीद पर चीन तथा पाकिस्तान से संबंधित सुरक्षा आवश्यकताओं का प्रभाव दिखाई देता है (जॉर्ज एवं अन्य, 2025)। अतः भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण में किसी एक देश की सैन्य एवं रणनीतिक नीति अन्य दो देशों की सुरक्षा धारणाओं और विदेश नीति को प्रभावित करती है।

रूस की बदलती भूमिका और भारत के साथ रणनीतिक साझेदारी

भारत और रूस के संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि शीत युद्ध के दौर से जुड़ी हुई है। स्वतंत्र भारत ने औपचारिक रूप से गुटनिरपेक्ष नीति अपनाई, किंतु समय के साथ सोवियत संघ भारत का एक महत्त्वपूर्ण रक्षा, औद्योगिक और कूटनीतिक सहयोगी बन गया। वर्ष 1971 की भारत–सोवियत शांति, मैत्री एवं सहयोग संधि दोनों देशों के रणनीतिक संबंधों में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव थी। सोवियत संघ के विघटन के बाद भी भारत और रूसी संघ ने अपने संबंधों को बनाए रखा तथा उन्हें रणनीतिक साझेदारी का स्वरूप प्रदान किया। मोहन (2003) के अनुसार, शीत युद्ध के बाद भारतीय विदेश नीति ने बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप रणनीतिक व्यवहार में अधिक व्यावहारिकता और विविधता को अपनाया।

भारत–रूस संबंधों में रक्षा सहयोग विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण रहा है। भारतीय सशस्त्र बलों में रूसी और सोवियत मूल के अनेक रक्षा प्लेटफॉर्म लंबे समय से प्रयुक्त होते रहे हैं। इसके अतिरिक्त परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष, तेल और गैस, तकनीकी सहयोग तथा बहुपक्षीय कूटनीति दोनों देशों की साझेदारी के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं। यद्यपि हाल के वर्षों में भारत ने अपने रक्षा आयातों में विविधीकरण किया है, फिर भी रूस उसकी रक्षा आपूर्ति व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जॉर्ज एवं अन्य (2025) के अनुसार, वर्ष 2020–2024 के दौरान भारत के प्रमुख हथियार आयातों में रूस की हिस्सेदारी लगभग 36 प्रतिशत थी, जबकि वर्ष 2015–2019 में यह लगभग 55 प्रतिशत थी। यह परिवर्तन भारत द्वारा फ्रांस, इज़राइल, अमेरिका और अन्य देशों के साथ रक्षा संबंधों के विस्तार तथा घरेलू रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने की नीति से भी संबंधित है।

दूसरी ओर, रूस–चीन संबंधों की बढ़ती निकटता ने भारत के सामने एक जटिल रणनीतिक परिस्थिति उत्पन्न की है। विशेष रूप से रूस और पश्चिमी देशों के बीच बढ़ते तनाव तथा फरवरी 2022 के बाद यूक्रेन युद्ध से उत्पन्न भू-राजनीतिक परिस्थितियों ने रूस के लिए चीन के आर्थिक और राजनीतिक महत्त्व को बढ़ाया है। चीन और रूस अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में पश्चिमी प्रभुत्व के विकल्प के रूप में बहुध्रुवीयता तथा संप्रभुता आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था पर बल देते रहे हैं। लो (2008) ने रूस–चीन संबंधों को ऐसे व्यावहारिक सामरिक संबंधों के रूप में व्याख्यायित किया है, जिनमें साझा हितों के साथ-साथ दोनों देशों की अपनी स्वतंत्र रणनीतिक प्राथमिकताएँ भी महत्त्वपूर्ण हैं।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

इसके साथ ही पाकिस्तान और रूस के बीच भी संपर्क में वृद्धि हुई है। रक्षा अभ्यास, आतंकवाद-रोधी सहयोग, अफगानिस्तान से संबंधित क्षेत्रीय सुरक्षा तथा ऊर्जा सहयोग जैसे क्षेत्रों ने रूस–पाकिस्तान संबंधों को नए आयाम प्रदान किए हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि दक्षिण एशिया में रूस की नीति अब केवल भारत के साथ पारंपरिक संबंधों पर आधारित न रहकर बहुस्तरीय क्षेत्रीय सहभागिता की दिशा में विकसित हो रही है। फिर भी भारत रूस के लिए एक महत्त्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार बना हुआ है।

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और बदलते वैश्विक शक्ति समीकरण

समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बहुध्रुवीयता की अवधारणा भारत–चीन–पाकिस्तान और रूस के बीच संबंधों को समझने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बहुध्रुवीय व्यवस्था में शक्ति किसी एक महाशक्ति के पास केंद्रित न होकर अनेक वैश्विक एवं क्षेत्रीय शक्तियों के बीच वितरित होती है। अचार्या (2014) के अनुसार, वर्तमान विश्व व्यवस्था में पश्चिमी प्रभुत्व के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों, सभ्यताओं और उभरती शक्तियों की भूमिका बढ़ रही है, जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था अधिक बहुकेंद्रीय स्वरूप ग्रहण कर रही है।

ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे बहुपक्षीय मंच इस परिवर्तन को संस्थागत रूप प्रदान करते हैं। भारत, चीन और रूस ब्रिक्स के प्रमुख सदस्यों में हैं, जबकि भारत, चीन, रूस और पाकिस्तान शंघाई सहयोग संगठन से जुड़े हुए हैं। इन मंचों के माध्यम से ऐसे देश भी आर्थिक विकास, आतंकवाद-रोधी सहयोग, क्षेत्रीय संपर्क, ऊर्जा, वैश्विक शासन और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार जैसे विषयों पर संवाद करते हैं जिनके बीच गंभीर रणनीतिक मतभेद विद्यमान हैं। ब्रिक्स के आधिकारिक विवरण के अनुसार, संगठन आर्थिक एवं वित्तीय सहयोग, राजनीति एवं सुरक्षा तथा जन-से-जन संपर्क जैसे क्षेत्रों में सदस्य देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है (ब्रिक्स ब्राज़ील, 2025)।

भारत के दृष्टिकोण से यह बदलती व्यवस्था अवसर और चुनौती दोनों प्रस्तुत करती है। एक ओर चीन की बढ़ती आर्थिक एवं सैन्य शक्ति तथा चीन–पाकिस्तान रणनीतिक सहयोग भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण चुनौती है; दूसरी ओर रूस के साथ दीर्घकालिक रणनीतिक संबंध भारत को रक्षा, ऊर्जा और यूरेशियाई क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं। साथ ही भारत अमेरिका, जापान, फ्रांस, यूरोपीय देशों तथा इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के अन्य साझेदारों के साथ संबंधों का विस्तार कर रहा है। यह प्रवृत्ति भारतीय विदेश नीति की रणनीतिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण की नीति को प्रतिबिंबित करती है।

अतः भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण में रूस की भूमिका को केवल पारंपरिक मित्रता अथवा प्रतिद्वंद्विता के दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता। यह संबंध राष्ट्रीय हित, सुरक्षा आवश्यकताओं, आर्थिक अवसरों, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा और वैश्विक शक्ति-संतुलन से संचालित बहुआयामी प्रक्रिया है। रूस का भारत के साथ ऐतिहासिक सहयोग, चीन के साथ बढ़ती रणनीतिक निकटता और पाकिस्तान के साथ विकसित होती सहभागिता दक्षिण एशियाई शक्ति-संतुलन को नया स्वरूप प्रदान करती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इन्हीं बदलते संबंधों का विश्लेषण करते हुए यह समझना है कि उभरती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की रणनीतिक स्थिति, राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति किस प्रकार प्रभावित हो रही है।

साहित्य समीक्षा

समकालीन वैश्विक राजनीति में भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण तथा रूस की भूमिका पर हाल के अध्ययनों में शक्ति-संतुलन, सामरिक स्वायत्तता, रक्षा सहयोग और बहुध्रुवीयता को विशेष महत्त्व दिया गया है। निम्नलिखित साहित्य समीक्षा में नवीनतम अध्ययनों और रिपोर्टों के आधार पर इस बदलते भू-राजनीतिक समीकरण को प्रस्तुत किया गया है।

वेज़मैन, जोकिक, जॉर्ज, हुसैन एवं वेज़मैन (2026) ने अंतरराष्ट्रीय हथियार हस्तांतरण की नवीन प्रवृत्तियों का अध्ययन करते हुए दक्षिण एशिया में भारत–चीन–पाकिस्तान सुरक्षा त्रिकोण की बढ़ती जटिलता को रेखांकित किया। अध्ययन के अनुसार 2021–2025 में भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा प्रमुख हथियार आयातक रहा, जबकि पाकिस्तान पाँचवें स्थान पर था। पाकिस्तान के हथियार आयात में चीन की लगभग 80 प्रतिशत हिस्सेदारी तथा भारत की रूसी रक्षा प्रणालियों पर निरंतर निर्भरता क्षेत्र में परस्पर सुरक्षा प्रतिस्पर्धा को प्रदर्शित करती है। लेखकों के अनुसार भारत की रक्षा आवश्यकताएँ मुख्यतः चीन और पाकिस्तान से उत्पन्न रणनीतिक चुनौतियों से प्रभावित हैं।

स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान (2026) ने वैश्विक हथियार प्रवाह का विश्लेषण करते हुए बताया कि एशिया और ओशिनिया वैश्विक रक्षा व्यापार का प्रमुख क्षेत्र बने हुए हैं। 2021–2025 के दौरान इस क्षेत्र के हथियार आयात में अमेरिका की हिस्सेदारी 35 प्रतिशत, रूस की 17 प्रतिशत और चीन की 14 प्रतिशत रही। भारत के हथियार आयात में रूस की हिस्सेदारी लगभग 40 प्रतिशत रही, जबकि पाकिस्तान के हथियार आयात में चीन का प्रभुत्व स्पष्ट रहा। यह स्थिति भारत–रूस और चीन–पाकिस्तान रक्षा संबंधों के माध्यम से दक्षिण एशिया में विकसित हो रहे प्रतिस्पर्धी शक्ति-संतुलन को स्पष्ट करती है।

बॉलिस (2025) ने भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक वित्तीय नेटवर्क के बदलते स्वरूप का अध्ययन करते हुए रूस, भारत और चीन सहित प्रमुख देशों द्वारा वैकल्पिक वित्तीय व्यवस्थाओं की ओर बढ़ती रुचि का विश्लेषण किया। अध्ययन में अमेरिका–चीन व्यापार प्रतिस्पर्धा, रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों तथा SWIFT जैसी वित्तीय अवसंरचनाओं के रणनीतिक उपयोग को वैश्विक वित्तीय विखंडन का महत्त्वपूर्ण कारण माना गया। लेखक के अनुसार वैकल्पिक भुगतान नेटवर्क और सीमा-पार डिजिटल वित्तीय व्यवस्थाओं का विकास बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को आर्थिक आधार प्रदान कर सकता है तथा उभरती शक्तियों की रणनीतिक स्वायत्तता को बढ़ा सकता है।

स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान (2025) ने अंतरराष्ट्रीय हथियार हस्तांतरण का विश्लेषण करते हुए पाया कि 2020–2024 में भारत और पाकिस्तान विश्व के पाँच सबसे बड़े हथियार आयातक देशों में शामिल थे। इसी अवधि में चीन के हथियार आयात में उल्लेखनीय कमी आई, जिसका प्रमुख कारण उसकी स्वदेशी रक्षा उत्पादन क्षमता का विस्तार था। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत, चीन और पाकिस्तान की रक्षा क्षमताओं का विकास अलग-अलग दिशाओं में हो रहा है—चीन आत्मनिर्भरता बढ़ा रहा है, पाकिस्तान चीनी आपूर्ति पर अधिक निर्भर है, जबकि भारत रूस के साथ संबंध बनाए रखते हुए रक्षा स्रोतों का विविधीकरण कर रहा है।

जॉर्ज, जोकिक, हुसैन, वेज़मैन एवं वेज़मैन (2025) ने 2020–2024 की वैश्विक हथियार हस्तांतरण प्रवृत्तियों के आधार पर भारत, पाकिस्तान, चीन और रूस के बीच रक्षा संबंधों में संरचनात्मक परिवर्तन की ओर संकेत किया। उनके विश्लेषण में भारत की रूसी हथियारों पर निर्भरता पहले की तुलना में कम होती दिखाई देती है, जबकि पाकिस्तान और चीन के रक्षा संबंध अधिक सुदृढ़ हुए हैं। यह परिवर्तन दर्शाता है कि भारत रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए अपने रक्षा साझेदारों का विविधीकरण कर रहा है। वहीं रूस के वैश्विक रक्षा निर्यात में परिवर्तन उसकी एशियाई रणनीति और भारत के साथ दीर्घकालिक रक्षा साझेदारी के लिए नए प्रश्न उत्पन्न करता है।

बाजवा (2025) ने मई 2025 के भारत–पाकिस्तान संघर्ष के संदर्भ में पाकिस्तानी मीडिया की भूमिका का अध्ययन किया। लगभग 2,600 समाचार आलेखों के विश्लेषण के आधार पर शोध में पाया गया कि सैन्य तनाव के दौरान युद्ध और राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित विमर्श ने घरेलू राजनीतिक असहमति एवं विपक्ष से संबंधित समाचारों को पीछे छोड़ दिया। यह अध्ययन भारत–पाकिस्तान संबंधों के सैन्य पक्ष के साथ संघर्ष के राजनीतिक-सामाजिक प्रभावों को समझने में उपयोगी है। साथ ही यह दर्शाता है कि भारत–चीन–पाकिस्तान शक्ति-समीकरण का विश्लेषण केवल सैन्य क्षमताओं तक सीमित न रखकर राजनीतिक संचार और जनमत के स्तर पर भी किया जाना आवश्यक है।

शोध उद्देश्य

1. भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण में रूस की बदलती रणनीतिक भूमिका तथा उसके क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन पर प्रभाव का विश्लेषण करना।
2. बदलते वैश्विक शक्ति समीकरणों के संदर्भ में भारत, चीन, पाकिस्तान और रूस के सामरिक, राजनीतिक एवं आर्थिक संबंधों का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध "भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण और रूस: बदलते वैश्विक शक्ति समीकरणों का विश्लेषण" के अध्ययन हेतु मुख्यतः गुणात्मक एवं वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक शोध पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन की प्रकृति गैर-अनुभवजन्य है तथा इसमें द्वितीयक स्रोतों के आधार पर संबंधित देशों के राजनीतिक, सामरिक, आर्थिक और कूटनीतिक संबंधों का विश्लेषण किया गया है। शोध के लिए पुस्तकों, शोध-पत्रों, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जर्नलों, सरकारी रिपोर्टों, विदेश मंत्रालयों के आधिकारिक दस्तावेजों, नीति-पत्रों तथा विश्वसनीय संस्थागत रिपोर्टों से सामग्री संकलित की गई है। विशेष रूप से भारत–चीन संबंध, चीन–पाकिस्तान रणनीतिक साझेदारी, भारत–रूस संबंध तथा रूस के चीन और पाकिस्तान के साथ विकसित होते संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन तथा बदलती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के संदर्भ में इन देशों की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। संकलित सामग्री का विषयगत, तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक विश्लेषण करते हुए क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन, रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक शक्ति समीकरणों पर इनके प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है।

विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण और रूस की भूमिका का विश्लेषण समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बदलते शक्ति-संतुलन, रणनीतिक स्वायत्तता, रक्षा संबंधों, आर्थिक हितों और बहुध्रुवीयता के संदर्भ में किया गया है। अध्ययन के प्रथम उद्देश्य

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

के अनुरूप रूस की बदलती रणनीतिक भूमिका और उसके क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन पर प्रभाव का परीक्षण किया गया है, जबकि दूसरे उद्देश्य के अंतर्गत भारत, चीन, पाकिस्तान और रूस के राजनीतिक, सामरिक एवं आर्थिक संबंधों की परस्पर संबद्धता को समझने का प्रयास किया गया है। द्वितीयक स्रोतों, आधिकारिक दस्तावेजों तथा संस्थागत रिपोर्टों के तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान शक्ति-समीकरण स्थायी गठबंधनों के बजाय राष्ट्रीय हितों, रणनीतिक आवश्यकता और विषय-विशिष्ट साझेदारियों पर अधिक आधारित होता जा रहा है।

भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण में बदलता सामरिक शक्ति-संतुलन

भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण दक्षिण एशियाई सुरक्षा व्यवस्था का सबसे महत्त्वपूर्ण सामरिक समीकरण है। इसमें भारत को एक ओर चीन की बढ़ती सैन्य, आर्थिक और तकनीकी क्षमता से उत्पन्न चुनौती का सामना करना पड़ता है, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान के साथ उसकी दीर्घकालीन सुरक्षा प्रतिस्पर्धा बनी हुई है। चीन और पाकिस्तान के बीच गहरी रणनीतिक साझेदारी इन दोनों आयामों को परस्पर जोड़ती है। इस कारण भारत की रक्षा नीति को केवल किसी एक सीमा अथवा एक प्रतिद्वंद्वी के संदर्भ में नहीं देखा जा सकता। स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान के अनुसार, भारत की उच्च हथियार आयात आवश्यकताओं के पीछे चीन और पाकिस्तान से संबंधित सुरक्षा धारणाएँ प्रमुख कारकों में शामिल हैं (जॉर्ज एवं अन्य, 2025)।

इस शक्ति-संतुलन में चीन की स्थिति विशिष्ट है। चीन ने आर्थिक विकास के साथ अपनी स्वदेशी रक्षा उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय विस्तार किया है। सिपरी के अनुसार, वर्ष 2015–2019 से 2020–2024 के बीच चीन के प्रमुख हथियार आयात में लगभग 64 प्रतिशत की कमी आई, जिसका एक प्रमुख कारण आयातित प्रणालियों को स्वदेशी रूप से विकसित और निर्मित हथियारों से प्रतिस्थापित करना था (सिपरी, 2025)। इसके विपरीत भारत अभी भी बड़े पैमाने पर विदेशी रक्षा प्रणालियों का आयात करता है, यद्यपि आत्मनिर्भरता और रक्षा उत्पादन के स्वदेशीकरण की दिशा में प्रयास बढ़े हैं।

पाकिस्तान की स्थिति चीन से गहरे रक्षा संबंधों के कारण विशेष महत्त्व रखती है। वर्ष 2020–2024 में पाकिस्तान के प्रमुख हथियार आयात में चीन की हिस्सेदारी लगभग 81 प्रतिशत थी। इसी अवधि में पाकिस्तान के हथियार आयात में पिछले पाँच वर्षीय कालखंड की तुलना में लगभग 61 प्रतिशत वृद्धि हुई (जॉर्ज एवं अन्य, 2025)। इससे स्पष्ट होता है कि चीन–पाकिस्तान साझेदारी केवल कूटनीतिक समर्थन या आर्थिक परियोजनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका ठोस सैन्य आयाम भी है। अतः भारत की सुरक्षा रणनीति में चीन और पाकिस्तान को अलग-अलग चुनौतियों के बजाय अनेक परिस्थितियों में परस्पर संबद्ध सामरिक कारकों के रूप में देखना आवश्यक हो गया है।

रूस–भारत संबंध और रणनीतिक स्वायत्तता

भारत–रूस संबंध भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण में रूस की भूमिका को समझने का केंद्रीय आधार हैं। शीत युद्ध काल से भारत और तत्कालीन सोवियत संघ के बीच रक्षा, औद्योगिक, वैज्ञानिक और कूटनीतिक सहयोग विकसित हुआ। सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत और रूस ने इन संबंधों को नई परिस्थितियों के अनुरूप आगे बढ़ाया। दिसंबर 2025 में आयोजित 23वें भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन में दोनों देशों ने अपनी 'विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी' को पुनः पुष्ट किया तथा राजनीतिक, सैन्य, सुरक्षा, व्यापार, निवेश, ऊर्जा, परमाणु, अंतरिक्ष, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित अनेक क्षेत्रों में सहयोग को आगे बढ़ाने पर बल दिया (भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, 2025)।

रक्षा संबंध इस साझेदारी का प्रमुख स्तंभ रहे हैं, किंतु वर्तमान आँकड़े इनके स्वरूप में परिवर्तन का संकेत देते हैं। सिपरी के अनुसार, 2020–2024 में भारत के प्रमुख हथियार आयात में रूस की हिस्सेदारी 36 प्रतिशत थी, जो 2015–2019 में 55 प्रतिशत और 2010–2014 में 72 प्रतिशत थी (जॉर्ज एवं अन्य, 2025)। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए कि भारत–रूस रक्षा संबंध अप्रासंगिक हो रहे हैं। इसके बजाय यह भारत द्वारा रक्षा आपूर्ति के स्रोतों का विविधीकरण करने और घरेलू उत्पादन बढ़ाने की रणनीति को दर्शाता है।

2021–2025 के नवीनतम आँकड़े भी इस संबंध की निरंतरता को दर्शाते हैं। सिपरी के अनुसार, इस अवधि में रूस भारत का सबसे बड़ा एकल हथियार आपूर्तिकर्ता बना रहा और भारतीय आयात में उसकी हिस्सेदारी लगभग 40 प्रतिशत थी। वहीं भारत ने पश्चिमी देशों से रक्षा खरीद और स्वदेशी उत्पादन दोनों का विस्तार किया (जॉर्ज एवं अन्य, 2026)। इसलिए भारत की नीति को रूस से दूरी बनाने के बजाय रणनीतिक स्वायत्तता के अंतर्गत साझेदारियों के विविधीकरण के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

रणनीतिक स्वायत्तता भारत को रूस के साथ पारंपरिक संबंध बनाए रखने के साथ अमेरिका, फ्रांस, जापान, यूरोप तथा अन्य इंडो-पैसिफिक साझेदारों के साथ सहयोग बढ़ाने की क्षमता प्रदान करती है। इस दृष्टि से रूस भारत के लिए केवल हथियारों का स्रोत नहीं, बल्कि ऊर्जा सुरक्षा, परमाणु सहयोग, अंतरिक्ष, यूरेशियाई संपर्क और बहुपक्षीय कूटनीति में भी महत्त्वपूर्ण भागीदार है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

रूस–चीन निकटता और दक्षिण एशिया पर प्रभाव

वर्तमान वैश्विक शक्ति-समीकरण में रूस–चीन संबंधों की बढ़ती निकटता सबसे महत्त्वपूर्ण भू-राजनीतिक परिवर्तनों में से एक है। दोनों देश पश्चिमी प्रभुत्व वाली अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के कई पहलुओं की आलोचना करते हुए अधिक बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था का समर्थन करते हैं। रूस और पश्चिम के बीच तनाव, विशेषकर 2022 के बाद, ने रूस के लिए चीन के आर्थिक और रणनीतिक महत्त्व को बढ़ाया है। वहीं चीन के लिए रूस ऊर्जा, रक्षा, यूरेशियाई राजनीति तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे मंचों पर एक महत्त्वपूर्ण साझेदार है।

इस निकटता के बावजूद रूस–चीन संबंधों को औपचारिक सैन्य गठबंधन के समान समझना उचित नहीं होगा। दोनों देशों के राष्ट्रीय हित कई क्षेत्रों में समान हैं, किंतु मध्य एशिया, आर्थिक असमानता, प्रौद्योगिकी और दीर्घकालीन प्रभाव से जुड़े प्रश्न उनकी साझेदारी को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करते हैं। भारत के दृष्टिकोण से रूस–चीन निकटता इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि भारत चीन को अपनी प्रमुख दीर्घकालीन सामरिक चुनौती के रूप में देखता है, जबकि रूस भारत का ऐतिहासिक रणनीतिक साझेदार है।

रूस के रक्षा निर्यात में भी संरचनात्मक परिवर्तन हुआ है। सिपरी के अनुसार, 2015–2019 से 2020–2024 के बीच रूस के प्रमुख हथियार निर्यात में लगभग 64 प्रतिशत गिरावट आई और वह अमेरिका तथा फ्रांस के बाद तीसरा सबसे बड़ा हथियार निर्यातक बन गया (सिपरी, 2025)। नवीनतम 2021–2025 आँकड़ों में रूस के हथियार निर्यात का लगभग 74 प्रतिशत केवल भारत, चीन और बेलारूस को गया, जिसमें भारत अकेले रूसी निर्यात का 48 प्रतिशत प्राप्तकर्ता था (जॉर्ज एवं अन्य, 2026)। इससे स्पष्ट होता है कि रूस की एशियाई रणनीति में भारत और चीन दोनों अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

भारत के लिए इस परिस्थिति में रूस के साथ संवाद बनाए रखना सामरिक रूप से उपयोगी है। यदि रूस की चीन पर आर्थिक और रणनीतिक निर्भरता अत्यधिक बढ़ती है, तो एशिया में शक्ति-संतुलन पर उसका दीर्घकालीन प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए भारत–रूस संबंध भारत की व्यापक यूरेशियाई रणनीति में संतुलनकारी महत्त्व रखते हैं।

चीन–पाकिस्तान साझेदारी और रूस–पाकिस्तान संबंधों का उभरता आयाम

चीन–पाकिस्तान संबंध भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण के सबसे संस्थागत और दीर्घकालीन संबंधों में से हैं। रक्षा सहयोग के अतिरिक्त चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा दोनों देशों के आर्थिक और रणनीतिक संबंधों का महत्त्वपूर्ण आधार है। ग्वादर बंदरगाह, ऊर्जा परियोजनाएँ, परिवहन अवसंरचना और औद्योगिक सहयोग चीन को अरब सागर से संपर्क प्रदान करते हैं तथा पाकिस्तान को निवेश एवं अवसंरचना विकास के अवसर उपलब्ध कराते हैं। इस साझेदारी के कारण भारत के लिए दक्षिण एशियाई सुरक्षा वातावरण अधिक जटिल हो जाता है।

रक्षा क्षेत्र में चीन की भूमिका इस साझेदारी की गहराई को और स्पष्ट करती है। 2021–2025 के नवीनतम सिपरी आँकड़ों के अनुसार पाकिस्तान के हथियार आयात में चीन की हिस्सेदारी लगभग 80 प्रतिशत थी और 2016–2020 की तुलना में पाकिस्तान के हथियार आयात में 66 प्रतिशत वृद्धि हुई (जॉर्ज एवं अन्य, 2026)। इससे यह स्पष्ट होता है कि पाकिस्तान की सैन्य आधुनिकीकरण प्रक्रिया में चीन केंद्रीय भूमिका निभा रहा है।

इसी संदर्भ में रूस–पाकिस्तान संबंधों का सीमित किंतु विकसित होता स्वरूप भी उल्लेखनीय है। ऐतिहासिक रूप से रूस और पाकिस्तान के संबंध भारत–रूस संबंधों की तुलना में कम विकसित रहे, किंतु बदलती क्षेत्रीय परिस्थितियों ने दोनों देशों के बीच संवाद की संभावनाएँ बढ़ाई हैं। आतंकवाद-रोधी सहयोग, अफगानिस्तान की स्थिरता, ऊर्जा, क्षेत्रीय संपर्क और सैन्य अभ्यास जैसे क्षेत्रों में संपर्क रूस की दक्षिण एशिया नीति में विविधीकरण को दर्शाता है।

फिर भी रूस–पाकिस्तान संबंधों को भारत–रूस साझेदारी के समान स्तर पर रखना उचित नहीं है। भारत और रूस के संबंधों की संस्थागत गहराई, रक्षा सहयोग, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष, व्यापार और उच्चस्तरीय वार्षिक शिखर व्यवस्था कहीं अधिक व्यापक है। अतः रूस की पाकिस्तान के साथ सहभागिता को भारत के स्थानापन्न के बजाय क्षेत्रीय हितों को विविध बनाने की रणनीति के रूप में समझा जा सकता है।

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में चार देशों के संबंधों का समग्र मूल्यांकन

भारत, चीन, पाकिस्तान और रूस के संबंधों का समग्र विश्लेषण यह दर्शाता है कि वर्तमान विश्व व्यवस्था पारंपरिक द्विध्रुवीय या एकध्रुवीय संरचना से अधिक जटिल बहुध्रुवीय स्वरूप की ओर बढ़ रही है। इस व्यवस्था में देश अलग-अलग मुद्दों पर अलग-अलग साझेदारों के साथ सहयोग कर सकते हैं। भारत रूस के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाए रखते हुए पश्चिमी देशों के साथ रक्षा और प्रौद्योगिकी सहयोग बढ़ाता है; रूस चीन के साथ निकटता विकसित करते हुए भारत से अपने ऐतिहासिक संबंध बनाए रखता है; चीन पाकिस्तान का प्रमुख रणनीतिक साझेदार होने के साथ भारत के साथ व्यापार और बहुपक्षीय मंचों पर सहभागिता करता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन इस बहुस्तरीय कूटनीति के प्रमुख उदाहरण हैं। इन मंचों पर भारत, चीन और रूस के साथ-साथ पाकिस्तान भी विभिन्न स्तरों पर क्षेत्रीय सुरक्षा, आतंकवाद, आर्थिक सहयोग और कनेक्टिविटी जैसे मुद्दों पर संवाद करता है। इससे स्पष्ट होता है कि रणनीतिक प्रतिस्पर्धा सहयोग की सभी संभावनाओं को समाप्त नहीं करती।

रक्षा क्षेत्र के नवीनतम आँकड़े बदलते शक्ति-संतुलन को विशेष रूप से स्पष्ट करते हैं। 2021–2025 में भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा प्रमुख हथियार आयातक रहा, जबकि पाकिस्तान भी शीर्ष पाँच आयातकों में सम्मिलित था। इसी अवधि में चीन के हथियार आयात में 72 प्रतिशत कमी आई, जो उसकी बढ़ती घरेलू रक्षा उत्पादन क्षमता को प्रदर्शित करती है। रूस के वैश्विक हथियार निर्यात में भी उल्लेखनीय गिरावट आई, फिर भी भारत उसके रक्षा निर्यात का सबसे बड़ा बाजार बना रहा (सिपरी, 2026)।

समग्र रूप से अध्ययन के प्रथम उद्देश्य के संदर्भ में यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण में रूस की भूमिका प्रत्यक्ष संतुलनकर्ता की अपेक्षा एक बहुआयामी रणनीतिक शक्ति की है, जो भारत के साथ गहरे ऐतिहासिक संबंध बनाए रखते हुए चीन के साथ बढ़ती साझेदारी और पाकिस्तान के साथ सीमित सहभागिता को आगे बढ़ा रही है। दूसरे उद्देश्य के संदर्भ में विश्लेषण दर्शाता है कि चारों देशों के सामरिक, राजनीतिक और आर्थिक संबंध प्रतिस्पर्धा तथा सहयोग के मिश्रण पर आधारित हैं। भारत के लिए इस परिवर्तित वातावरण में रणनीतिक स्वायत्तता, रक्षा आत्मनिर्भरता, रूस के साथ संबंधों की निरंतरता, चीन के साथ नियंत्रित प्रतिस्पर्धा तथा बहुपक्षीय मंचों के प्रभावी उपयोग का संयोजन दीर्घकालीन राष्ट्रीय हितों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन "भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण और रूस: बदलते वैश्विक शक्ति समीकरणों का विश्लेषण" से यह निष्कर्ष निकलता है कि दक्षिण एशिया की समकालीन भू-राजनीति अब केवल भारत–पाकिस्तान की पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता अथवा भारत–चीन सीमा विवाद तक सीमित नहीं रही है। चीन के आर्थिक एवं सामरिक उदय, चीन–पाकिस्तान रणनीतिक साझेदारी, भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका और रूस की परिवर्तित एशियाई नीति ने क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन को बहुआयामी बना दिया है। वर्तमान व्यवस्था में भारत को चीन और पाकिस्तान से संबंधित सुरक्षा चुनौतियों के साथ-साथ रूस–चीन निकटता से उत्पन्न दीर्घकालीन रणनीतिक परिवर्तनों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। सिपरी के विश्लेषण से भी स्पष्ट होता है कि भारत और पाकिस्तान की रक्षा आवश्यकताओं तथा चीन की बढ़ती स्वदेशी सैन्य क्षमता ने दक्षिण एशिया के सामरिक वातावरण को नया स्वरूप दिया है (जॉर्ज एवं अन्य, 2025)।

अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि रूस आज भी भारत की विदेश और सुरक्षा नीति में विशिष्ट स्थान रखता है, किंतु भारत–रूस संबंधों का स्वरूप बदल रहा है। रक्षा क्षेत्र में रूस पर भारत की निर्भरता पूर्ववर्ती दशकों की तुलना में कम हुई है, क्योंकि भारत ने अपने रक्षा आयात स्रोतों का विविधीकरण करने के साथ स्वदेशी रक्षा उत्पादन को प्रोत्साहित किया है। फिर भी रूस रक्षा प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, परमाणु सहयोग, अंतरिक्ष तथा यूरेशियाई कूटनीति में भारत का महत्त्वपूर्ण भागीदार बना हुआ है। भारत और रूस द्वारा अपनी विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी को निरंतर महत्त्व देना इस संबंध की संस्थागत स्थिरता को प्रदर्शित करता है (भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, 2025)। इस प्रकार भारत की नीति रूस से दूरी के बजाय रणनीतिक स्वायत्तता के अंतर्गत साझेदारियों के विविधीकरण की दिशा में विकसित होती दिखाई देती है।

दूसरी ओर, रूस–चीन संबंधों की बढ़ती निकटता इस त्रिकोणीय व्यवस्था में एक नया सामरिक आयाम प्रस्तुत करती है। पश्चिम के साथ रूस के तनाव ने चीन के आर्थिक और कूटनीतिक महत्त्व को बढ़ाया है, जबकि दोनों देश बहुध्रुवीय अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की आवश्यकता पर बल देते रहे हैं। इसके समानांतर चीन–पाकिस्तान रक्षा और आर्थिक साझेदारी अधिक संस्थागत हुई है। पाकिस्तान के हथियार आयात में चीन की अत्यधिक हिस्सेदारी इस सामरिक निकटता का प्रत्यक्ष संकेत है (सिपरी, 2025)। रूस का पाकिस्तान के साथ सीमित रक्षा, ऊर्जा और क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग भी यह दर्शाता है कि मॉस्को दक्षिण एशिया में बहुआयामी संबंध विकसित करना चाहता है। हालांकि रूस–पाकिस्तान संबंधों की प्रकृति और संस्थागत गहराई अभी भारत–रूस साझेदारी के समकक्ष नहीं है।

समग्र रूप से अध्ययन यह स्थापित करता है कि भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण में रूस की भूमिका किसी एक देश के पक्ष में स्थायी संतुलन स्थापित करने की अपेक्षा अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप बहुस्तरीय संबंध बनाए रखने की है। ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंच इस बात को स्पष्ट करते हैं कि प्रतिस्पर्धी देश भी आर्थिक, सुरक्षा और वैश्विक शासन संबंधी विषयों पर सहयोग कर सकते हैं। भारत के लिए बदलती व्यवस्था में रणनीतिक स्वायत्तता, रक्षा आत्मनिर्भरता, रूस के साथ दीर्घकालीन साझेदारी, चीन के साथ संतुलित प्रतिस्पर्धा तथा बहुपक्षीय कूटनीति का समन्वय विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। अतः भविष्य की वैश्विक व्यवस्था को स्थायी गठबंधनों के बजाय लचीली साझेदारियों, राष्ट्रीय हितों और बहुध्रुवीय शक्ति-संतुलन से अधिक प्रभावित होने वाली व्यवस्था के रूप में देखा जा सकता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

सुझाव

भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण और रूस के बदलते संबंधों के संदर्भ में भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए बहुस्तरीय विदेश नीति को और सुदृढ़ करना चाहिए। भारत–रूस संबंधों को पारंपरिक रक्षा सहयोग से आगे बढ़ाकर ऊर्जा, परमाणु प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, व्यापार और निवेश जैसे क्षेत्रों में विस्तारित किया जाना चाहिए। चीन के साथ सीमा विवादों के शांतिपूर्ण समाधान हेतु सैन्य एवं कूटनीतिक संवाद तंत्र को प्रभावी बनाए रखना आवश्यक है। चीन–पाकिस्तान रणनीतिक सहयोग से उत्पन्न सुरक्षा चुनौतियों को देखते हुए भारत को रक्षा आत्मनिर्भरता, सीमा अवसंरचना, समुद्री सुरक्षा और आधुनिक तकनीकी क्षमताओं को प्राथमिकता देनी चाहिए। साथ ही, रूस–चीन निकटता के बीच भारत को रूस के साथ स्वतंत्र द्विपक्षीय संबंधों की उपयोगिता बनाए रखनी चाहिए। ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे बहुपक्षीय मंचों का उपयोग क्षेत्रीय स्थिरता, आतंकवाद-रोधी सहयोग और आर्थिक सहभागिता बढ़ाने के लिए किया जाना चाहिए। दीर्घकाल में संतुलित, व्यावहारिक और राष्ट्रीय हित आधारित कूटनीति भारत की क्षेत्रीय एवं वैश्विक स्थिति को मजबूत कर सकती है।

भविष्य की संभावनाएं

भविष्य में भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण और रूस से संबंधित शोध को बदलती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, क्षेत्रीय सुरक्षा तथा नई रणनीतिक साझेदारियों के संदर्भ में और विस्तारित किया जा सकता है। आगामी अध्ययनों में रूस–चीन संबंधों की दिशा, भारत–रूस रणनीतिक साझेदारी, चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे तथा रूस–पाकिस्तान सहयोग के दीर्घकालीन प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सकता है। साथ ही, ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन की भूमिका, इंडो-पैसिफिक रणनीति, ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा और आर्थिक कनेक्टिविटी को भी अध्ययन में शामिल किया जा सकता है। भविष्य में प्राथमिक आँकड़ों एवं विशेषज्ञ साक्षात्कारों पर आधारित अध्ययन क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन की अधिक व्यापक समझ विकसित कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. अचार्या, अमितव। (2014)। द एंड ऑफ अमेरिकन वर्ल्ड ऑर्डर [अमेरिकी विश्व व्यवस्था का अंत]। कैम्ब्रिज: पॉलिटी प्रेस।
2. बाजवा, टी. एस. (2025)। युद्धकालीन मीडिया गतिशीलता और उभरते लोकतंत्र: मई 2025 के भारत–पाकिस्तान संघर्ष में पाकिस्तानी मीडिया का अध्ययन।
3. बॉलिस, ए. (2025)। भू-राजनीतिक तनाव और वित्तीय नेटवर्क: वैकल्पिक व्यवस्थाओं की ओर रणनीतिक बदलाव।
4. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। (2025)। भारत–चीन सीमा संबंधी मुद्दों पर प्रश्न संख्या 843। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।
5. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। (2025)। भारत–रूस: विश्वास और पारस्परिक सम्मान पर आधारित समय-परीक्षित प्रगतिशील साझेदारी—23वें भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के पश्चात संयुक्त वक्तव्य। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय।
6. ब्रिक्स ब्राज़ील। (2025)। ब्रिक्स के बारे में। ब्राज़ील की ब्रिक्स अध्यक्षता, 2025।
7. जॉर्ज, एम., जोकिक, के., हुसैन, ज़ेड., वेज़मैन, पी. डी., एवं वेज़मैन, एस. टी. (2025)। अंतरराष्ट्रीय हथियार हस्तांतरण की प्रवृत्तियाँ, 2024। स्टॉकहोम: स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान।
8. जॉर्ज, एम., जोकिक, के., हुसैन, ज़ेड., वेज़मैन, पी. डी., एवं वेज़मैन, एस. टी. (2026)। अंतरराष्ट्रीय हथियार हस्तांतरण की प्रवृत्तियाँ, 2025। स्टॉकहोम: स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान।
9. नाई, जोसेफ एस., जूनियर। (2011)। द फ्यूचर ऑफ पावर [शक्ति का भविष्य]। न्यूयॉर्क: पब्लिक अफेयर्स।
10. मियरशाइमर, जॉन जे. (2001)। द ट्रेजेडी ऑफ ग्रेट पावर पॉलिटिक्स [महाशक्ति राजनीति की त्रासदी]। न्यूयॉर्क: डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी।
11. मोहन, सी. राजा। (2003)। क्रॉसिंग द रूबिकॉन: द शेपिंग ऑफ इंडियाज़ न्यू फॉरेन पॉलिसी [रूबिकॉन को पार करना: भारत की नई विदेश नीति का निर्माण]। नई दिल्ली: पेलग्रेव मैकमिलन।
12. राजामोहन, सी. (2015)। मोदीज़ वर्ल्ड: एक्सपैंडिंग इंडियाज़ स्फीयर्स ऑफ इन्फ्लुएंस [मोदी का विश्व: भारत के प्रभाव क्षेत्र का विस्तार]। नोएडा: हार्पर कॉलिन्स इंडिया।
13. लो, बोबो। (2008)। एक्सिस ऑफ कन्वीनियंस: मॉस्को, बीजिंग एंड द न्यू जियोपॉलिटिक्स [सुविधा की धुरी: मॉस्को, बीजिंग और नई भू-राजनीति]। वाशिंगटन, डी.सी.: ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस।
14. वेज़मैन, एस. टी., जोकिक, के., जॉर्ज, एम., हुसैन, ज़ेड., एवं वेज़मैन, पी. डी. (2026)। अंतरराष्ट्रीय हथियार हस्तांतरण की प्रवृत्तियाँ, 2025। स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान।
15. स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान। (2025)। सिपरी ईयरबुक 2025: अंतरराष्ट्रीय हथियार हस्तांतरण। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

16. स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान। (2025)। सिपरी ईयरबुक 2025: आयुध, निरस्त्रीकरण और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा। स्टॉकहोम: सिपरी।
17. स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान। (2026)। अंतरराष्ट्रीय हथियार हस्तांतरण की नवीन प्रवृत्तियाँ, 2021–2025। स्टॉकहोम: सिपरी।
18. स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान। (2026)। वैश्विक हथियार प्रवाह और एशिया–ओशिनिया में रक्षा आयात की प्रवृत्तियाँ। स्टॉकहोम: सिपरी।